CHAPTER SIX	**अध्याय छः**
Desire and Longing	**इच्छा और लालसा**
-1-	-१-
The Pain in Desire Is Fear of Frustration	इच्छा में जो पीड़ा है वह कुंठा का भय है
For most of us, desire is quite a problem—the desire for property; for position, for power, for comfort, for immortality, for continuity, the desire to be loved, to have something permanent, satisfying, lasting, something which is beyond time. Now, what is desire? What is this thing that is urging, compelling us?—which doesn't mean that we should be satisfied with what we have or with what we are, which is merely the opposite of what we want. We are trying to see what desire is, and if we can go into it tentatively, hesitantly, I think we will bring about a transformation which is not a mere substitution of one object of desire for another object of desire. But this is generally what we mean by "change," is it not? Being dissatisfied with one particular object of desire, we find a substitute for it. We are everlastingly moving from one object of desire to another which we consider to be higher, nobler, more refined, but however refined, desire is still desire, and in this movement of desire there is endless struggle, the conflict of the opposites.	अधिकांशतः हमारे लिए इच्छा एक समस्या ही है--धन-संपदा की इच्छा, प्रतिष्ठा की, शक्ति की, ऐशो-आराम की, अमरता की, निरंतरता की इच्छा, प्रेम पाने की इच्छा, किसी ऐसी चीज़ की इच्छा जो स्थायी हो, तृप्तिदायी हो, कालजयी हो, कुछ ऐसी चीज़ जो काल से परे हो। तो इच्छा है क्या? यह ऐसी क्या चीज़ है जो हमें उकसाती रहती है, हमारे पीछे पड़ी रहती है? अभिप्राय यह नहीं है कि जो कुछ हमारे पास है, या जो कुछ हम हैं, उससे हमें संतुष्ट रहना चाहिए--यह तो केवल हमारी इच्छा का विलोम, उसका विपरीत हुआ। हम तो यह जानने का प्रयास कर रहे हैं कि इच्छा है क्या, और यदि हम परीक्षण करते हुए और शंकाशील रहते हुए इसकी गहराई में जाएंगे तो मैं सोचता हूं कि हममें एक कायाकल्प, एक बुनियादी बदलाव होगा और यह बदलाव एक इच्छित वस्तु के स्थान पर दूसरी इच्छित वस्तु लाने जैसा विकल्प नहीं होगा। परंतु ऐसे विकल्प को ही हम सामान्यतः 'परिवर्तन' कहते हैं, है न? किसी इच्छित वस्तु से असंतुष्ट होकर हम उसका विकल्प तलाशने लगते हैं। किसी एक इच्छित वस्तु से उस दूसरी वस्तु की ओर हम अनंत रूप से दौड़ते रहते हैं जो पहली से श्रेष्ठतर हो, अधिक उत्कृष्ट हो, परंतु कितनी ही उत्कृष्ट क्यों न हो, इच्छा तो इच्छा ही रहेगी। और, इच्छा की इस दौड़ में अनंत संघर्ष है, प्रतिकूलताओं का संघर्ष है।

Edited with Infix PDF Editor
- free for non-commercial use.
To remove this notice, visit:
www.iceni.com/unlock.htm

So, is it not important to find out what is desire and whether it can be transformed?...And can I dissolve that center of desire—not one particular desire, one particular appetite or craving, but the whole structure of desire, of longing, hoping, in which there is always the fear of frustration? The more I am frustrated, the more strength I give to the 'me'. As long as there is hoping, longing, there is always the background of fear, which again strengthens that center...	तो, क्या यह जानना महत्त्वपूर्ण नहीं है कि इच्छा क्या है और क्या इसका रूपांतरण किया जा सकता है? और, क्या यह 'मैं' इच्छा के उस केंद्र का विलय कर सकता है--किसी एक विशेष भूख या लालसा का नहीं, बल्कि इच्छा, चाहत और कामना की संपूर्ण संरचना के उस केंद्र का क्या मैं विसर्जन कर सकता हूं जिसमें कुंठा का भय सदैव बना रहता है? जितना अधिक मैं कुंठित होता हूं, अपने 'अहं' को उतना ही सबल बनाता जाता हूं। जब तक कामना है, लालसा है तब तक भय की पृष्ठभूमि भी बनी रहती है जो पुनः पुनः इस केंद्र को और सबल बनाती रहती है।
Beyond the physical needs, any form of desire—for greatness, for truth, for virtue—becomes a psychological process by which the mind, builds the idea of the 'me' and strengthens itself at the center.	शारीरिक आवश्यकताओं से परे इच्छा का कोई भी स्वरूप--चाहे वह महानता के लिए हो या सत्य, सद्‌गुण के लिए--केवल एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया बन जाता है, जिसके द्वारा मन 'अहं' की अवधारणा बना लेता है और इस केंद्र में रहता हुआ स्वयं को बलिष्ठ करता रहता है।
-2-	-२-
Follow the Movement of Desire	पीछा करके देखिए इच्छा किधर जा रही है
Desire means the urge to fulfill appetites of various kinds that demands action—the longing for sex, or to become a great man, the desire to possess a car...	इच्छा का अर्थ है उन अनेक प्रकार की क्षुधाओं का पेट भरना जिनके लिए कुछ न कुछ करना पड़ता है--यौनाचार की लालसा, बड़ा आदमी बनने की लालसा या कार खरीदने की....
So, what is desire? You see a beautiful house or a nice car or a man in power, position; and you wish you had that house, you were that man in position, or you were riding amid applause. How does that desire arise? First, there is the visual perception—the seeing of the house. The 'you' comes much later. The seeing of the house, that is visual attraction, the attraction of a line, the beauty of a car, the color, and then that perception.	तो इच्छा है क्या? आप कोई सुंदर भवन या आकर्षक कार देखते हैं, या उच्च पद पर आसीन किसी व्यक्ति को देखते हैं, और उस भवन को पाने के लिए, उस उच्चपदस्थ व्यक्ति के समान बनने के लिए, या वाह-वाही के बीच कार में सवारी करने के लिए लालायित हो उठते हैं। यह इच्छा उत्पन्न कैसे हुई? सर्वप्रथम, उस भवन को देखने से एक दृष्टिगत आकर्षण हुआ, रूप-रेखा का, कार की मनमोहकता और रंग का आकर्षण हुआ, और फिर मानसपटल पर उसका चित्रण।
Please follow this. You are doing it, not I. I am giving words, explaining; but you are doing. We are sharing the thing together. You are not merely listening to	कृपया ध्यानपूर्वक समझते चलिए। यह आप कर रहे हैं, मैं नहीं। मैं तो मात्र शाब्दिक विवरण दे रहा हूं, परंतु कर आप ही रहे हैं। हम सब इस बात के सहभागी बन रहे हैं।

what the speaker is saying; therefore, you are observing your own movement of thought as desire. There is no division between thought and seeing; they are one movement. Between thought and desire, there is no separate thing—which we will go into presently.	वक्ता क्या कह रहा है, उसे आप केवल सुन ही नहीं रहे बल्कि आप अपने ही विचारों की इच्छा के रूप में हो रही गतिविधि का अवलोकन कर रहे हैं। यहां विचार और अवलोकन के बीच कोई विभाजन नहीं है, दोनों में एक ही गति हैं। विचार और इच्छा में कोई पृथकता नहीं हैं--इसे अभी हम सविस्तार देखेंगे।
-3-	-३-
The Rise of Desire	इच्छा का सिर उठाना
So there is the seeing, the perceiving, which creates sensation; then there is the touching; and then the desire—the desire to possess—to give to that sensation continuity. This is very simple. I see a beautiful woman or a man. Then there is the pleasure of seeing, and the pleasure demands continuity. So I think; there is thought born out of it. And the more thought thinks about that pleasure, there is continuity of that pleasure, or of that pain. Then, where there is that continuity, the 'I' comes in—I want, I don't want. This is what we all do, all day, sleeping or waking.	तो पहले होता है देखना, फिर बोध, फिर संवेदन की उत्पत्ति, तत्पश्चात स्पर्श और फिर उपजती है इच्छा--उसे पा लेने की इच्छा ताकि उस संवेद-संवेग की निरंतरता बनी रहे। यह सरल सी बात है। मैं किसी सुंदर महिला या पुरुष को देखता हूं, तब उसे देखने में मुझे सुख मिलता है और फिर वह सुख निरंतरता चाहता है। इस प्रकार, इससे विचार का उद्‌गम होता है। और, विचार जितना अधिक उस सुख के विषय में सोचता है, उतनी ही उस सुख या उस पीड़ा की निरंतरता बनी रहती है। और, इस निरंतरता के दौरान इसमें 'मैं' प्रवेश करता है--मैं चाहता हूं, मैं नहीं चाहता। यही है जो हम सब कर रहे हैं--दिन-रात, सोते-जागते।
So, one sees how desire arises. Perception, contact, sensation; then giving to that sensation continuity, and that continuity to sensation is desire. There is nothing mysterious about desire. Now the desire becomes very complicated when there is a contradiction, not In the desire itself, but in the object through which it is going to fulfill. Right? I want to be a very rich man—that is, my desire says that I must be very rich because I see people with property, a car and all the rest of it. Desire says, "I must have, I must fulfill."	तो आपने देखा कि इच्छा कैसे उत्पन्न होती है : दर्शन, संपर्क, फिर उस संवेदन को एक निरंतरता दे देना। संवेदन को निरंतरता दे देना इच्छा है। इच्छा के बारे में कुछ भी रहस्यमय नहीं है। यही इच्छा बहुत जटिल हो जाती है जब अंतर्विरोध होता है--इच्छा में नहीं बल्कि इच्छा के उस विषय में अंतर्विरोध होता है जिसके माध्यम से इच्छा की पूर्ति की जाने वाली है। मैं अत्यधिक धनवान बनना चाहता हूं--मेरी इच्छा कहती है कि मुझे एक धनवान व्यक्ति बनना चाहिए क्योंकि मैं लोगों को संपत्ति, कार आदि-आदि से संपन्न देखता हूं। इच्छा कहती है,''मुझे भी दो, मुझे भी चाहिए।''
-4-	-४-
Desire Must Be Understood, not	इच्छा का गला मत घोंटिए, उसे समझिए

Throttled	
Desire wants to fulfill itself in every direction; the objects of fulfillment are very attractive, but each object contradicts the other.	इच्छा स्वयं को प्रत्येक दिशा में परिपूर्ण करना चाहती है। परिपूर्णता की ये वस्तुएं होती बहुत आकर्षक हैं, परंतु प्रत्येक वस्तु दूसरी के विरुद्ध होती है।
So we live, conforming, battling fulfilling, and being frustrated. Thai: Is our life. And to find God, the so-called religious people, the saints, the popes, the monks, the nuns, the social-service people, the so-called religious people say, "You must suppress; you must sublimate; you must identify yourself with God so that desire disappears; when you see a woman, turn your back on her; don't be sensitive to anything, to life; don't hear music, don't see a tree; above all, don't see a woman!" And so that is the life of the mediocre man who is a slave to society!	इस प्रकार हम अपना जीवन अनुकरण करते हुए, परिपूर्णता के लिए जूझते हुए और कुंठाओं में जकड़े हुए बिता देते हैं। यही है हमारा जीवन। और, ईश्वर को पाने के लिए तथाकथित धार्मिक लोग, संत, संन्यासी, पोप, नन, समाजसेवी कहते हैं, ‘‘तन का दमन करो, उसे परिशुद्ध करो, ईश्वर के साथ तादात्म्य करो, ताकि इच्छाओं का अंत हो सके। तुम्हें यदि कोई स्त्री दीख जाए तो उसकी ओर पीठ कर लो, किसी भी चीज़ के प्रति संवेदनशील न बनो--जीवन के प्रति भी, संगीत मत सुनो, वृक्ष –को मत देखो, और स्त्री को तो देखो ही मत।’’ और यही जीवन हो जाता है उस आधे-अधूरे व्यक्ति का जो समाज का गुलाम है।
Without understanding—-understanding, not suppressing—desire, man will never be free of conformity or fear. You know what happens when you suppress something? Your heart is dull! Have you seen the sannyasis, the monks, the nuns, the people who escape from life? How frigid, how hard, virtuous, saintly they are, living in tight discipline! They will talk everlastingly about love, and inwardly they are boiling; their desires never fulfilled or never understood; they are dead beings in a cloak of virtue!	इच्छा का दमन करने से नहीं, बल्कि उसे समझकर ही मनुष्य अनुकरण और भय से मुक्त हो सकता है। आप जानते हैं कि जब किसी चीज़ को दबाया जाता है तब क्या होता है? आपका मन कुंठित हो जाता है। क्या आपने संन्यासियों, साधुओं, ननों और उन लोगों को देखा है जो जीवन से पलायन कर गये हैं? अनुशासन के शिकंजे में कसे हुए ये लोग कितने रूखे, कितने कठोर, नियमबद्ध और पाखंडी हो जाते हैं। वे प्रेम के विषय पर धाराप्रवाह व्याख्यान तो दे सकते हैं, परंतु भीतर से वे उफनते रहते हैं, उनकी इच्छाएं कभी पूर्ण नहीं हो पातीं या समझी नहीं जातीं। सद्‌गुणों की चादर ओढ़े जीवित शव हो जाते हैं ये लोग।
What we are saying Is something entirely different.. one has to find out, learn, about desire—learn, not what to do about it, not how to throttle it.	जो हम कह रहे हैं वह एक बिल्कुल भिन्न बात है. . . इच्छा को जानना, उसके बारे में सीखना-समझना आवश्यक है--सीखना, यह नहीं कि इसके साथ क्या किया जाए या कैसे इसका गला घोंटा जाए।
-5-	-५-

With Understanding, Desire Happens but Does not Take Root	समझ रहने पर, इच्छा तो होती है परंतु जड़ नहीं जमा पाती
Desire creates contradiction, and the mind that is at all alert does not like to live in contradiction; therefore, it tries to get rid of desire. But if the mind can understand desire without trying to brush it away, without saying, "This is a better desire and that is a worse one, I am going to keep this and discard the other;" if it can be aware of the whole field of desire without rejecting, without choosing, without condemning, then you will see that the mind becomes very quiet; desires come, but they no longer have impact; they are no longer of great significance; they do not take root in the mind and create problems. The mind reacts; otherwise it would not be alive, but the reaction is superficial and does not take root. That is why it is important to understand this whole process of desire in which most of us are caughat.	इच्छा विरोधाभासों को जन्म देती है, और जो मन पूरी तरह सजग है वह विरोधाभासों में जीना पसंद नहीं करता। अतः वह इच्छा से पीछा छुड़ाना चाहता है। परंतु मन यदि इच्छा को दरकिनार करने के बजाय उसे समझ सके, यह कहे बिना, ‘‘यह इच्छा अच्छी है, वह बुरी है, अतः मैं इसे पूरी करूंगा और छोड़ दूंगा’’--यदि मन इच्छा को त्यागे बिना, पसंद-नापसंद किये बिना, निंदा किये बिना उसके संपूर्ण स्वरूप को समझ ले, तब आप पायेंगे कि मन बहुत शांत-स्थिर हो जाता है। इच्छाएं आती तो हैं परंतु वे कोई छाप नहीं छोड़ पातीं, उनका कोई विशेष महत्त्व नहीं रह जाता, वे मन में जड़ नहीं जमा पातीं और समस्याएं खड़ी नहीं कर पातीं। मन प्रतिक्रिया तो करता है, क्योंकि इसके बिना वह जी नहीं सकता, परंतु यह प्रतिक्रिया सतही रहती है, गहन-गंभीर नहीं हो पाती। इसलिए इच्छा के इस संपूर्ण प्रक्रम को समझ लेना बहुत महत्त्वपूर्ण है जिसके फंदे में अधिकांश लोग फंसे हुए हैं।
-6-	-६-
Can We Have Desire without Having to Act on It?	—क्या ऐसा संभव है कि हममें इच्छा भले हो किंतु उसकी पूर्ति का कोई आग्रह न हो?
But for most of us desire means self-indulgence, self-expression: I desire that, and I must have it. Whether it is a beautiful person, or a house, or an idea, I must have it. Why? Why does the "must" come into being? Why does desire say, "I must have that"—which brings about the agony, the drive, the urge, the demands of a compulsive existence? It is fairly simple, fairly clear, why there is this insistence on self-expression, which is a form of desire. In self-expression, in being somebody, there is great delight because you are recognized. People say, "By Jove, do you know who he is?"—and all the rest of that nonsense. You may say	हम अधिकांश लोगों के लिए इच्छा का अर्थ है आत्मलिप्तता, आत्मप्रदर्शन : मुझे अमुक चीज़ की इच्छा है, मुझे वह मिलनी चाहिए। चाहे वह कोई सुंदर व्यक्ति हो, भवन हो, या कोई विचार, वह मेरे पास होना चाहिए। ‘‘मुझे अमुक चीज़ मिलनी ही चाहिए’’--वह क्या है जो इच्छित वस्तु को अनिवार्य रूप से पा लेने की इस तड़प, इस संवेग, इस मांग को उत्पन्न करता है? यह एक सरल और स्पष्ट बात है कि इच्छा के ही एक प्रकार अर्थात आत्म प्रदर्शन पर इतना ज़ोर क्यों दिया जाता है? आत्मप्रदर्शन में, कुछ बन जाने में एक आह्लाद है, क्योंकि आपको मान्यता मिलती है, पहचान मिलती है। लोग कहते हैं, ‘‘अरे आप जानते हैं वह कौन है?’’-- और इसी प्रकार

that it isn't just desire, it isn't just pleasure, because there is something behind desire which is much stronger still. But you cannot come to that without understanding pleasure and desire. The active process of desire and pleasure is what we call action. I want something, and I work, work, work to get it. I want to be famous as a writer, painter, and I do everything I can think of to become famous. Generally I fall by the wayside and never get recognized by the world, so I am frustrated, I go through agony; and then I become cynical, or I take on the pretense of humility, and all the rest of that nonsense begins.	की अनर्गलता। आप कहेंगे कि यह केवल इच्छा नहीं है, केवल सुख नहीं है, क्योंकि इस इच्छा के पीछे भी कुछ है जो अभी भी बहुत सशक्त है, परंतु इस बात तक आप सुख व इच्छा को समझे बिना नहीं पहुंच पाएंगे। इच्छा और सुख की हलचल को हम कर्म कह देते हैं। मैं कोई चीज़ पाना चाहता हूं और उसे पाने के लिए कोई काम करता हूं, करता रहता हूं। मैं लेखक या चित्रकार के रूप में प्रसिद्ध होना चाहता हूं और यह प्रसिद्धि पाने के लिए मैं जो कुछ कर सकता हूं वह करता हूं। परंतु प्रायः मैं हाशिये पर आ जाता हूं और संसार में कभी अपनी पहचान नहीं बना पाता, मान्यता हासिल नहीं कर पाता, इसलिए खिन्न हो जाता हूं, कुंठित हो जाता हूं। मैं इसके संताप से गुज़रता हूं और चिड़चिड़ा हो जाता हूं या विनम्रता का ढोंग करने लगता हूं--मुझमें इसी प्रकार की अनर्गलतायें आ जाती हैं।
-7-	–७–
Why Are We so Full of Longing?	हम लालसाओं से इतने लबालब क्यों हैं?
So we are asking ourselves: Why is there this insistence on desire being fulfilled? If you want a coat, a suit, a shirt, a tie, a pair of shoes, you get it—that is one thing. But behind this persistent drive to fulfill oneself, surely, there is the sense of complete inadequacy, loneliness. I can't live by myself, I can't be alone, because in myself I am insufficient. You know more than I do, you are more beautiful, more intellectual, more clever, you are more this and more that, and I want to be all those things and more. Why? I do not know whether you have ever asked yourself this question. If you have, and if for you it is not just a clever theoretical question, then you will find the answer...	हम स्वयं से पूछ रहे हैं कि हम में इच्छापूर्ति के लिए इतना दुराग्रह क्यों है? यदि आपको एक कोट, सूट, कमीज़, टाई, जूतों का एक जोड़ा चाहिए और उसे आप पा लेते हैं--यह तो एक सीधी सी बात हुई। परंतु, स्वयं को भरते रहने के अदम्य उद्वेग के पीछे निश्चय ही आधे–अधूरेपन का, अकेलेपन का एहसास होता है। मैं अपने ताईं नहीं जी सकता, मैं अकेला नहीं रह सकता क्योंकि स्वयं में मैं आधा–अधूरा जो हूं। आप मुझसे अधिक विज्ञ हैं, अधिक सुंदर हैं, अधिक बुद्धिमान हैं, अधिक चतुर हैं, आप मुझसे अधिक यह हैं, अधिक वह हैं, और मैं ये तमाम चीज़ें चाहता हूं, बल्कि इनसे भी अधिक चाहता हूं। क्यों? पता नहीं कि आपने स्वयं से यह प्रश्न किया है या नहीं। यदि आप यह प्रश्न करें, और यदि आपके लिए यह कोरा बौद्धिक या सैद्धांतिक प्रश्न नहीं है तो आपको उत्तर मिल जाएगा. . .
I want to know why one craves many things, or one thing. One wants to be happy, to find God, to be rich, to be	मैं जानना चाहता हूं कि कोई अनेक चीज़ों के पीछे, या किसी खास चीज़ के पीछे क्यों लालायित हो उठता है। वह सुखी होना चाहता

famous, to be complete, or to be liberated, whatever that may mean— you know all the things, a craving for which one builds up. One wants to have a perfect marriage, a perfect relationship with God, and so on. Why? First of all, it indicates how shallow the mind is, doesn't it? And doesn't it also indicate our own sense of loneliness, emptiness?	है, ईश्वर को पाना चाहता है, धनवान बनना चाहता है, या मुक्त होना चाहता है--चाहे उसके लिए इसका कुछ भी अर्थ हो--एक लालसा खड़ी करके उसे पाने की धुन में लग जाना, आपको यह सब पता ही है। वह एक सफल दांपत्य जीवन चाहता है, ईश्वर के साथ एक संपूर्ण संबंध चाहता है, वगैरह, वगैरह। क्यों? सर्वप्रथम तो यह इस बात का संकेत है कि मन बहुत उथला है, है न? और साथ ही, क्या यह हमारे अपने अकेलेपन, खोखलेपन की ओर भी संकेत नहीं है?
-8-	-८-
Desire Itself Is not the Problem: Only What We Do about It	इच्छा स्वयं में कोई समस्या नहीं है हम इसके विषय में जो कुछ करते हैं, केवल वह समस्या है।
Let us go on to consider desire. We know, do we not, the desire which contradicts itself, which is tortured, pulling in different directions; the pain, the turmoil, the anxiety of desire, and the disciplining, the controlling. And in the everlasting battle with it we twist it out of all shape and recognition; but it is there, constantly watching, waiting, pushing. Do what you will, sublimate it, escape from it, deny it or accept it, give it full rein—it is always there. And we know how the religious teachers and others have said that we should be desireless, cultivate detachment, be free from desire—which is really absurd, because desire has to be understood, not destroyed. If you destroy desire, you may destroy life itself. If you pervert desire, shape it, control it, dominate it, suppress it, you may be destroying something extraordinarily beautiful.	आइए हम इच्छा पर और आगे विचार करें। हम इच्छा को जानते हैं। यह अपने ही खिलाफ खड़ी हो जाती है, विभिन्न दिशाओं से खींचातानी के कारण इसे यातना झेलनी पड़ती है। हम इसकी पीड़ा, इसकी उद्विग्नता और व्यग्रता को जानते हैं। इसके साथ अपने अंतहीन संघर्ष में हम इसे तोड़-मरोड़ कर तरह-तरह के आकार और मान्यताएं दे देते हैं, परंतु फिर भी यह बनी ही रहती है--लगातार हम पर नज़र रखे हुए, प्रतीक्षा करते हुए और हमें उकसाते हुए। चाहे आप कुछ भी करें--इसे श्रेष्ठता का सेहरा पहना दें, इससे पलायन करें, इसे स्वीकार या अस्वीकार करें या अपनी पूरी बागडोर इसके हाथों में दे दें--यह सदैव बनी ही रहती है। हम यह भी जानते हैं कि धार्मिक गुरु और अन्य लोग किस किस तरह हमें बताते रहे हैं कि हमें इच्छारहित होना चाहिए, अनासक्ति पैदा करनी चाहिए, इच्छा से मुक्त होना चाहिए--ये सब बिल्कुल विसंगत बातें हैं, क्योंकि इच्छा को तो समझने की आवश्यकता है, न कि ध्वस्त करने की। यदि आप इच्छा को ध्वस्त कर देंगे तो शायद जीवन को भी ध्वस्त कर डालेंगे। यदि आप इच्छा को उलट देंगे, कोई आकार दे देंगे, नियंत्रित कर लेंगे, इस पर शासन करेंगे, इसका दमन करेंगे तो आप एक अद्‌भुत सौंदर्य को कुचल डालेंगे।

CHAPTER SEVEN	**अध्याय–७**
Self-Esteem: Success and Failure	**स्वाभिमान : सफलता और विफलता**
-1-	–१–
Self-Esteem	स्वाभिमान
We all place ourselves at various levels, and we are constantly falling from these heights. It is the falls we are ashamed of. Self-esteem is the cause of our shame, of our fall. It is this self-esteem that must be understood, and not the fall. If there is no pedestal on which you have put yourself, how can there be any fall?	हम सभी विभिन्न स्तरों पर स्वयं को स्थापित करते रहते हैं, साथ ही हम निरंतर इन ऊंचाइयों से गिरते भी रहते हैं। यह गिरना ही है जिससे हम लज्जित होते हैं। स्वाभिमान हमारी लज्जा और हमारे पतन का कारण है। स्वाभिमान को समझने की ज़रूरत है, न कि पतन को। यदि आपने स्वयं को किसी आसन पर स्थापित नहीं किया है तो फिर उससे पतन कैसे हो सकता है?
-2-	–२–
You Are What You Are	आप जो हैं, वही हैं
Why have you put yourself on a pedestal called self-esteem, human dignity, the ideal, and so on? If you can understand this, then there will be no shame of the past; it will have completely gone. You will be what you are without the pedestal. If the pedestal is not there, the height that makes you look down or look up, then you are what you have always avoided. It is this avoidance of what is, of what you are, that brings about confusion and antagonism, shame and resentment. You do not have to tell me or another what you are, but be aware of what you are, whatever it is, pleasant or unpleasant: live with it without justifying or resisting it. Live with it without naming it; for the very term is a condemnation or identification. Live with it without fear, for fear prevents communion.	स्वाभिमान, मानवीय गरिमा, आदर्श इत्यादि नाम वाले आसनों पर आपने स्वयं को क्यों आसीन कर रखा है? यदि आप यह सब समझ लें तो आप विगत के प्रति लज्जित नहीं होंगे, वह पूरी तरह से तिरोहित हो जाएगा। आप वही रहेंगे जो आप बिना उस आसन के हैं। यदि वह आसन नहीं है, वह ऊंचाई नहीं है जो आपको ऊपर–नीचे करती रही है तो आप अपने उसी स्वरूप में आ जाते हैं जिससे आप बचकर निकलते रहे हैं। इसी बचकर निकलने के कारण, जो आप हैं, उससे नज़र चुरा लेने के कारण यह संभ्रम, प्रतिद्वंद्विता, लज्जा और विद्वेष उत्पन्न होते हैं। आपको मुझे या अन्य किसी को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि आप क्या हैं, बल्कि जो आप हैं, जो कुछ भी हैं––सुखद या असुखद, उसके प्रति सजग रहिए, बिना उसे सही ठहराये, बिना उसका विरोध किये, बस उसके साथ बने रहिए। उसे कोई नाम दिये बिना उसके साथ रहिए, क्योंकि कोई भी नाम देने का मतलब है उसे निंदित करना या उससे जुड़ जाना। बिना किसी भय के उसके साथ रहिए क्योंकि भय 'जो है' से घनिष्ठता नहीं होने देगा।

-3-	–३–
Ambition Clouds Clarity	महत्त्वाकांक्षा स्पष्टता को धुंधला कर देती है
Questioner: Sir, what is the function of thought in everyday life?	प्रश्नकर्ताः विचार का दिन प्रतिदिन के जीवन में क्या काम है?
Krishnamurti: The function of thought is to be reasonable, to think clearly, objectively, efficiently, precisely; and you can not think precisely, clearly, efficiently if you are tethered to your own personal vanity, to your own success, to you own fulfillment.	कृष्णमूर्तिः विचार का काम है विवेकपूर्ण होना और स्पष्ट रूप से, यथार्थ और तथ्यों के आधार पर कुशलतापूर्वक सोचना। और यदि आप अपने ही दंभ, अपनी ही सफलता और अपनी ही उपलब्धियों के खूंटे से बंधे रहते हैं तो आप यथातथ्य, स्पष्ट और कुशलतापूर्वक नहीं सोच सकते।
-4-	–४–
Ambition Is Fear	महत्त्वाकांक्षा है भय
What has ambition done in the world? So few have ever thought about it. When somebody is struggling to be on the top of somebody else, when everybody is trying to achieve, to gain, have you ever found out what is in their hearts? If you will look at your own heart and see when you are ambitious, when you are struggling to be somebody, spiritually or in the world, you find that there is the worm of fear inside it. The ambitious man is the most frightened man because he is afraid to be what he is, because he says, "If I am what I am, I shall be nobody. Therefore, I must be somebody, I must become the engineer, the engine driver, the magistrate, the judge, the minister."	इस संसार में महत्त्वाकांक्षा क्या है? इस विषय में बहुत कम लोगों ने सोचा है। जब कोई किसी अन्य के कंधे पर पैर रखकर ऊपर चढ़ने में लगा हो, जब हर एक व्यक्ति उपलब्धि, प्राप्ति में जुटा हो, तब क्या आप जानते हैं कि उसके मन में क्या चल रहा होता है? यदि आप स्वयं अपने हृदय में झांकें और देखें तो पाएंगे कि जब आप महत्त्वाकांक्षी होते हैं, जब आप सांसारिक या आध्यात्मिक रूप से कुछ बनने के लिए जूझ रहे होते हैं तब आपके अंदर भय का कीड़ा कुलबुला रहा होता है। महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति सर्वाधिक भयाक्रांत व्यक्ति होता है, क्योंकि वह जैसा है वैसा रहने से घबराता है, क्योंकि वह कहता है, ‘‘जैसा मैं हूं, यदि वैसा ही रहता हूं तो मैं कुछ भी नहीं, कहीं का नहीं रहूंगा। इसलिए मुझे कुछ बनना चाहिए, मुझे इंजीनियर, दंडाधिकारी, न्यायाधीश, या मंत्री बनना चाहिए।’’
— 5 —	–५–
Is Interest the Same as Ambition?	क्या रुचि और महत्त्वाकांक्षा समानार्थी हैं?
Questioner: If somebody has an ambition to be an engineer, does it not mean that he is interested in it?	प्रश्नकर्ताः यदि किसी की महत्त्वाकांक्षा इंजीनियर बनने की है, तो क्या इसका अर्थ

	यह नहीं है कि उसकी इसमें रुचि है?
Krishnamurti: Would you say being interested in something is ambition? We can give to that word ambition any meaning. Ambition, as we generally know it, is the outcome of fear. Now, if I am interested as a boy in being an engineer because I love it, because I want to build beautiful houses, because I want to have the best irrigation in the world, because I want to build the best roads, it means I love the thing; therefore, that is not ambition. In that, there is no fear. So, ambition and interest are two different things, are they not? I am interested in painting, I love it, I do not want to compete with the best painter or the most famous painter, I just love painting. You may be better at painting, but I do not compare myself with you. I love what I am doing when I paint; that in itself is sufficient for me.	कृष्णमूर्तिः आपके कहने का क्या यह अभिप्राय है कि किसी चीज़ में रुचि होना महत्त्वाकांक्षा है? हम इस 'महत्त्वाकांक्षा' शब्द को कोई भी अर्थ दे सकते हैं। जिस महत्त्वाकांक्षा को हम सामान्यतः जानते हैं वह तो भय की उपज होती है। यदि बचपन से मेरी रुचि इंजीनियर बनने की है क्योंकि यह मुझे प्रिय है, क्योंकि मैं सुंदर भवनों का निर्माण करना चाहता हूं, क्योंकि मैं बेहतरीन सड़कें बनाना चाहता हूं, तो इसका अर्थ हुआ कि मुझे इंजीनियरी से लगाव है। अतः यह महत्त्वाकांक्षा नहीं है। इसमें भय की कोई बात नहीं है। अतः महत्त्वाकांक्षा और रुचि दो भिन्न चीज़ें हैं, ठीक है न? मुझे चित्रकला बेहद पसंद है। मैं किसी महान या सुविख्यात चित्रकार से कोई स्पर्धा नहीं करना चाहता। मुझे तो बस चित्रकला से प्रेम है। इसमें आप मुझसे बेहतर हो सकते हैं, परंतु मैं अपनी तुलना आप से नहीं करता। जब मैं चित्र बना रहा होता हूं, तब जो कुछ मैं कर रहा होता हूं उसे मन से करता हूं। मेरे लिए अपने आप में यही पर्याप्त है।
-6-	-६-
Do What You Love	आपको जो कार्य दिल से अच्छा लगे वही करें
So, is it not very important when you are young, when you are in a place like this, to help you to awaken your own intelligence so that you will naturally find your vocation? Then, if you find it and if it is a true thing, then you will love it right through life. In that, there will be no ambition, no competition, no struggle, no fighting each other for position, for prestige; and perhaps then you will be able to create a new world. Then, in that world, all the ugly things of the old generation will not exist—their wars, their mischief, their separative gods, their rituals which mean absolutely nothing, their government, their violence. In a place of this kind, the responsibility of the teacher and of you is very great because you can create a new world, a	क्या यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि अभी जब कि आप कम-उम्र हैं और ऐसी अच्छी जगह रह रहे हैं तो प्रज्ञा को जाग्रत करने में आपकी मदद की जाए ताकि आगे चलकर आप अपनी सही आजीविका सहज रूप से तलाश सकें? यदि आपको वास्तव में सही आजीविका मिल पाती है तो आप उसे आजीवन प्रेमपूर्वक निभाएंगे। उसमें तब न कोई महत्त्वाकांक्षा रह पाएगी, न कोई प्रतिस्पर्धा होगी, न कोई संघर्ष होगा, कोई पद या प्रतिष्ठा पाने के लिए किसी से कोई भिड़ंत नहीं होगी, और शायद तभी आप एक नूतन संसार की रचना कर सकेंगे। उस संसार में पुरातन पीढ़ियों की किसी भी बेहूदा बात का अस्तित्व शेष नहीं रहेगा--उनके युद्ध, उनकी शैतानियत, फूट डालने वाले उनके देवी-देवता, उनके अर्थहीन रीति-रिवाज, उनकी सरकार, उनकी हिंसा--किसी का भी नहीं। इस जैसे स्थान में अध्यापकों का और आपका

new culture, a new way of life.	दायित्व बहुत बड़ा है, क्योंकि यहां आप एक नूतन संसार, संस्कृति और जीवन की एक नवीन शैली की रचना कर सकते हैं।
-7-	–७–
If You Love Flowers, Be a Gardener	फूलों से प्यार है तो माली बनें
So, what happens in the world is that everybody is fighting somebody. One man is lesser than another man. There is no love, there is no consideration, there is no thought. Each man wants to become somebody. A member of parliament wants to become the leader of the parliament, to become the prime minister, and so on and on and on. There is perpetual fighting, and our society is one constant struggle of one man against another, and this struggle is called the ambition to be something. Old people encourage you to do that. You must be ambitious, you must be something, you must marry a rich man or a rich woman, you must have the right kind of friends. So, the older generation, those who are frightened, those who are ugly in their hearts, try to make you like them, and you also want to be like them because you see the glamour of it all. When the governor comes, everybody bows...	इस संसार में जो हो रहा है, वह यह है कि प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी से लड़ रहा है। कोई कम कोई ज़्यादा। यहां न प्रेम है, न दूसरों की फिक्र है, न सोच–विचार। प्रत्येक व्यक्ति कुछ बनना चाहता है––संसद सदस्य, संसद अध्यक्ष, प्रधानमंत्री आदि–आदि। युद्ध अनवरत रूप से जारी है और हमारा समाज एक दूसरे से भिड़ जाने का अखाड़ा बना हुआ है। और इस भिड़ंत को कुछ बनने की महत्त्वाकांक्षा का नाम दे दिया जाता है। पुराने लोग आपको यही करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं––आपको महत्त्वाकांक्षी बनना चाहिए, आपको कुछ बनना चाहिए, आपको किसी धनी पुरुष या स्त्री से विवाह करना चाहिए, आपके मित्र सही ढंग के होने चाहिए। तो, भयभीत और मलिन मन वाली पुरातन पीढ़ी आपको अपने जैसा बनाना चाहती है, और आप भी उन जैसा ही बनना चाहते हैं, क्योंकि आपको इसकी चकाचौंध दीख रही है। जब राजा आता है तो सभी नतमस्तक हो जाते हैं. . .
That is why it is very important that you should find the right vocation. You know what "vocation" means? Something which you will love to do, which is natural. After all, that is the function of education, of a school of this kind, to help you grow dependently so that you are not ambitious but can find your true vocation. The ambitious man has never found his true vocation...	यह बहुत आवश्यक है कि आप उचित प्रकार का व्यवसाय तलाश करें। क्या आपको मालूम है व्यवसाय का अभिप्राय? एक ऐसा कार्य जिसे करना आपको पसंद हो और जिसे आप स्वाभाविक रूप से कर पाएं। अंततोगत्वा, शिक्षा और इस प्रकार के शिक्षालय का लक्ष्य भी तो यही है––आप आत्मनिर्भरतापूर्वक विकसित हो सकें, इसमें सहायक बनना जिससे आप महत्त्वाकांक्षी न बनकर अपने लिए सही कर्मभूमि तलाश सकें। कभी किसी महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति को अपने लिए सही कर्मभूमि नहीं मिल सकी है. .
That is not ambition, to do something marvelously, completely, truly according to what you think; that is not ambition; in	किसी कार्य को अनूठे ढंग से करना, पूर्णतया करना, बिल्कुल वैसा करना जैसा आप सोचते हैं––यह महत्त्वाकांक्षा नहीं है, इसमें कोई भय

that there is no fear.	नहीं है।
-8-	-८-
Comparison Breeds Competition, Ambition	स्पर्धा और महत्त्वाकांक्षा की जननी है तुलना
We are always comparing ourselves with somebody else. If I am dull, I want to be more clever. If I am shallow, I want to be deep. If I am ignorant, I want to be more clever, more knowledgeable. I am always comparing myself, measuring myself against others—a better car, better food, a better home, a better way of thinking. Comparison breeds conflict. And do you understand through comparison? When you compare two pictures, two pieces of music, two sunsets, when you compare that tree with another tree, do you understand either? Or do you understand something only when there is no comparison at all?	हम सदैव अपनी तुलना किसी और से किया करते हैं। यदि मैं सुस्त हूं तो तेज बनना चाहता हूं, यदि मैं उथला हूं तो गहन-गंभीर बनना चाहता हूं। यदि मैं सीधा-साधा हूं तो चतुर-चालाक बनना चाहता हूं, अधिक धनवान बनना चाहता हूं। मैं सदैव स्वयं की तुलना करता हूं, स्वयं को दूसरों के साथ मापता रहता हूं-- बेहतर कार, बेहतर भोजन, बेहतर घर, सोचने का बेहतर ढंग। तुलना से द्वंद्व उपजता है। और, क्या तुलना करने से आप में समझ आ सकती है? जब आप दो चित्रों की, संगीत की दो धुनों की, सूर्यास्त के दो दृश्यों की तुलना करते हैं, जब आप उस वृक्ष की अन्य वृक्ष के साथ तुलना करते हैं, तब क्या आप दोनों में से किसी को भी समझ पाते हैं? या कि किसी चीज़ को आप तभी समझ सकते हैं –जब आप कोई तुलना नहीं कर रहे होते?
So, is it possible to live without comparison of any kind, never translating yourself in terms of comparison with another or with some idea or with some hero or with some example? Because when you are comparing, when you are measuring yourself with 'what should be' or 'what has been', you are not seeing what is. Please listen to this. It is very-simple, and therefore probably you, being clever, cunning, will miss it. We are asking whether it is possible to live in this world without any comparison at all. Don't say no. You have never done it. You won't say, "I cannot do it; it is impossible because all my conditioning is to compare." In a schoolroom a boy is compared with another, and the teacher says, "You are not as clever as the other." The teacher destroys B when he is comparing B with A. That process goes on through life.	क्या यह संभव है कि बिना किसी प्रकार की तुलना किये जिया जाये, स्वयं को किसी अन्य व्यक्ति, या किसी धारणा, या किसी नायक या किसी उदाहरण के सांचे में ढालकर न देखा जाए? क्योंकि जब आप तुलना करते हैं, जब आप स्वयं को 'जो होना चाहिए' या 'जो हुआ है' से मापते हैं, तब आप 'जो है' को देख नहीं पाते। कृपया इसे ध्यानपूर्वक सुनें। है तो यह एक सीधी-सरल सी बात, परंतु शायद चतुर-चालाक होने के कारण आपसे यह छूट जाए। हमारा प्रश्न है कि इस संसार में किंचित मात्र भी तुलना किए बिना जीना क्या संभव है? ना मत कहिए। आप इस प्रकार कभी जिये ही नहीं हैं। ऐसा मत कहिए, ''मैं ऐसा नहीं कर सकता, यह असंभव है क्योंकि मेरे सारे पूर्वप्रभाव तुलना ही सिखाते आये हैं।'' कक्षा में एक छात्र की तुलना दूसरे छात्र से की जाती है। अध्यापक कहते हैं, ''तुम उतने चतुर नहीं हो जितना कि वह।'' जब अध्यापक 'क' की तुलना 'ख' से करता है तब 'क' पर

	कुठाराघात ही करता है--और यही सिलसिला जीवन पर्यंत चलता रहता है।
-9-	-९-
Comparison Prevents Clarity	तुलना स्पष्टता को धुंधला कर देती है
We think that comparison is essential for progress, for understanding, for intellectual development. I don't think it is. When you are comparing one picture with the other, you are not looking at either of them. You can only look at one picture when there is no comparison. So, in the same way, is it possible to live a life never comparing, psychologically, yourself with another? Never comparing with Rama, Sita, Gita, whoever it is, with the hero, with your gods, with your ideals. A mind that is not comparing at all, at any level, becomes extraordinarily efficient, becomes extraordinarily alive, because then it is looking at what is.	हम समझते हैं कि प्रगति के लिए, समझ के लिए, बौद्धिक विकास के लिए तुलना आवश्यक है। मैं नहीं मानता कि ऐसा है। जब आप किसी चित्र की तुलना किसी अन्य चित्र से करते हैं, तब आप दोनों में से किसी को नहीं देख रहे होते हैं। जब आप कोई तुलना न कर रहे हों, तभी किसी चित्र को सही अर्थों में देख पाते हैं। इसी तरह किसी दूसरे के साथ, मनोवैज्ञानिक रूप से, कोई भी तुलना किये बिना जीना क्या संभव है? राम, सीता, गीता, कोई नायक, देवी-देवता, कोई भी आदर्श--चाहे वह जो भी हो, किसी के साथ तुलना किए बिना जीना क्या संभव है? जो मन किसी भी स्तर पर कोई तुलना नहीं करता, वह विलक्षण रूप से सक्षम, विलक्षण रूप से जीवंत हो उठता है क्योंकि तब वह 'जो है' उसी को देख रहा होता है।
-10-	-१०-
Success and Failure	सफलता-विफलता
As long as success is our goal we cannot be rid of fear, for the desire to succeeds inevitably breeds the fear of failure. That is why the young should not be taught to worship success. Most people seek success in one form or another, whether on the tennis court, in the business world, or in politics. We all want to be on top, and this desire creates constant conflict within ourselves and with our neighbors; it leads to competition, envy, animosity and finally to war.	जब तक सफलता हमारा ध्येय बनी रहती है, तब तक हम भय से मुक्त नहीं हो सकते, क्योंकि सफलता की चाह अपरिहार्य रूप से विफलता के भय को जन्म देती है। इसीलिए हमें ध्यान रखना होगा कि बच्चों को सफलता की पूजा करना न सिखाएं। अधिकांश लोग किसी न किसी क्षेत्र में सफल होने की चाह रखते हैं, चाहे वह टेनिस कोर्ट हो, व्यावसायिक दुनिया हो या राजनीति। हम सभी शिखर पर पहुंचना चाहते हैं, और यही चाहत हमारे भीतर और अपने पड़ोसी के साथ एक निरंतर द्वंद्व मचाये रखती है। यह प्रतिस्पर्धा, डाह, दुर्भावना और अंततोगत्वा युद्ध की ओर धकेलने वाली होती है।
Like the older generation, the young also seek success and security; though at first	पुरातन पीढ़ी की तरह ही नयी पीढ़ी भी सफलता और सुरक्षा चाहती है। यद्यपि युवा

they may be discontented, they soon become respectable and are afraid to say no to society. The walls of their own desires begin to enclose them, and they fall in line and assume the reins of authority. Their discontent, which is the very flame of inquiry, of search, of understanding, grows dull and dies away, and in its place there comes the desire for a better job, a rich marriage, a successful career, all of which is the craving for more security.	लोग शुरू में इन मूल्यों के प्रति रुचि भले ही न दिखाएं, परंतु शीघ्र ही वे जब सम्मान पाने लगते हैं, फिर समाज को ना नहीं कह पाते। वे अपनी ही आकांक्षाओं की दीवारों के बीच सिमटने लगते हैं, वे पद-प्रतिष्ठा की भेड़चाल में शामिल हो जाते हैं और अधिकारों की बागडोर अपने हाथ में लेने लगते हैं। असंतोष के रूप में उठने वाली जिज्ञासा, खोज और सूझबूझ की लौ मद्धिम पड़ने लगती है और धीरे-धीरे बुझ भी जाती है; और उसका स्थान बेहतर आजीविका, वैभवशाली विवाह और एक सफल कैरियर ले लेते हैं--यह सब और अधिक सुरक्षा की ललक ही तो है।
There is no essential difference between the old and the young, for both are slaves to their own desires and gratifications. Maturity is not a matter of age, it comes with understanding. The ardent spirit of inquiry is perhaps easier for the young, because those who are older have been battered about by life, conflicts have worn them out and death in different forms awaits them. This does not mean that they are incapable of purposeful inquiry, but only that it is more difficult for them.	पुरातन और नूतन पीढ़ियों में कोई मूलभूत अंतर नहीं है; क्योंकि दोनों ही अपनी इच्छाओं और परितुष्टि की दास हैं। परिपक्वता का आयु से कोई सरोकार नहीं होता, वह तो समझ-बूझ से आती है। जिज्ञासा की उत्कट भावना शायद युवाओं के लिए सहज-सरल होती है, क्योंकि वयस्थ लोगों को तो जीवन ने तोड़ डाला है, द्वंद्वों के कारण वे चुक गये हैं और मृत्यु नाना रूपों में उनकी प्रतीक्षा में है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वे किसी सार्थक जिज्ञासा के योग्य नहीं रहे, परंतु यह उनके लिए एक कठिन कार्य अवश्य है।
Many adults are immature and rather childish, and this is a contributing cause of the confusion and misery in the world...	बहुत से वयस्थ लोग अपरिपक्व होते हैं--बल्कि बचकाने होते हैं, और यह संसार में संभ्रम और दुख में वृद्धि का कारण बन –रहा है. . .
It is security and success that most of us are after; and a mind that is seeking security, that craves success, is not intelligent, and is therefore incapable of integrated action. There can be integrated action only if one is aware of one's own conditioning, of one's racial, national, political, and religious prejudices; that is, only if one realizes that the ways of the self are ever separative.	यह सुरक्षा और सफलता ही है जिनके पीछे अधिकांश लोग पड़े हुए हैं। और जो मन सुरक्षा चाहता है, सफलता के लिए ललक रहा है, वह प्रज्ञावान नहीं हो सकता और इसलिए वह समग्र कर्म के योग्य नहीं हो सकता। समग्र कर्म तभी संभव है जब व्यक्ति अपने पूर्वप्रभावों के प्रति, अपने जातीय, राष्ट्रीय, राजनीतिक और धार्मिक पूर्वाग्रहों के प्रति पूर्णतया सजग-सचेत हो जाए, अर्थात वह इतना अवश्य जान ले कि अहं के तौर-तरीके बिलगावकारी होते हैं।
-11-	-११-

Draw Deeply from Life	गहरे पानी पैठ
Life is a well of deep waters. One can come to it with small buckets and draw only a little water, or one can come with large vessels, drawing plentiful waters that will nourish and sustain. While one is young is the time to investigate, to experiment with everything. The school should help its young people to discover their vocations and responsibilities, and not merely cram their minds with facts and technical knowledge; it should be the soil in which they can grow without fear, happily and integrally.	जीवन गहन जल का कुआं है। जो इसके पास एक छोटी सी लुटिया लेकर जाता है, वह उतना थोड़ा जल ही इससे पा सकता है, या फिर कोई एक विशाल पात्र लेकर इसके पास आता है और भरपूर जल पा लेता है जो उसे निरंतर पोषित करता रहता है। युवावस्था का समय तरह–तरह की खोजबीन करने का और चीज़ों के साथ विविध प्रयोग करने का होता है। शिक्षालयों को चाहिए कि वे तथ्यों और तकनीकी जानकारी से युवाजन का मस्तिष्क ठूंस–ठूंस कर भरने के बजाय उन्हें अपनी सही आजीविका और अपने दायित्वों का बोध कराने में सहायक बनें। स्कूल उनके लिए एक ऐसी वाटिका हो जिसमें ये निडर, प्रसन्न और समग्र रूप से फल–फूल सकें।
CHAPTER EIGHT	**अध्याय आठ**
Loneliness; Depression; Confusion	**अकेलापन, अवसाद व विभ्रम**
-1-	–१–
Is Loneliness the Same as Aloneness?	अकेलापन और एकाकीपन क्या एक ही चीज़ है?
We know loneliness, don't we, the fear, the misery, the antagonism, the real fright of a mind that is aware of its own loneliness. We all know that. Don't we? That state of loneliness is not foreign to any one of us. You may have all the riches, all the pleasures, you may have great capacity and bliss, but within, there is always the lurking shadow of loneliness. The rich man, the poor man who is struggling, the man who is writing, creating, the worshiper—they all know this loneliness. When it is in that state, what does the mind do? The mind turns on the radio, picks up a book, runs away from what is into something which is not. Sirs, do follow what I am saying—not the words, but the application, the observation of your own. loneliness.	हम अकेलेपन से परिचित हैं, है न? हम उस मन की घबराहट, क्लेश, वैरभाव और अपने अकेलेपन के एहसास से उपजी भयातुरता के असली रूप से परिचित हैं। हमारे लिए यह नयी बात नहीं है? अकेलेपन की यह अवस्था हमारे लिये अनजानी नहीं है। आपके पास विपुल समृद्धि हो, सारी सुख–सुविधाएं हों, अत्यधिक क्षमता और आनंद हो, परंतु फिर भी आपके मन में अकेलेपन का साया सदैव डोलता रहता है। धनवान व्यक्ति, जीवन से जूझता निर्धन व्यक्ति, लेखक, रचनाकार, पुजारी––ये सभी इस अकेलेपन से परिचित हैं। इस अवस्था में मन क्या करता है? वह रेडियो खोल लेता है, कोई पुस्तक उठा लेता है, 'जो है' से भागकर 'जो नहीं है' में चला जाता है। आप समझ रहे हैं न कि मैं क्या कह रहा हूं?––शब्दों को ही मत पकड़िए बल्कि पूरे संदर्भ को और अपने अकेलेपन की तस्वीर को ध्यान से देखिये।